Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 2945–2947

THE STATE AND DIRECTION OF SANSKRIT AND HINDI IN THE MUGHAL PERIOD

मुगल काल में संस्कृत एवं हिन्दी की दशा दिशा

Upendra Kumar Karmasheel [1], Ram Ekwal Sharma [2]

[1] Research Student, Department of History, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India
[2] Professor (Retired), Department of History, R.C. College Sakra, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpu, India

ABSTRACT

English: Sanskrit was neglected during the period of the first two Mughal emperors, but the third Mughal emperor Akbar gave it royal patronage. Although there were 59 very important poets of different languages in the court of Akbari, but the total number was much higher. Emperor Akbar also rewarded Sanskrit scholars. In that period, poets were mostly experts of both Sanskrit and Hindi. A dictionary of Sanskrit "Farsi Prakash" was written. Akbar ordered his court poet Faizi to convert important Sanskrit texts into Persian and explain its basic elements to the emperor. Faizi changed his name and came to Banaras and received Sanskrit education from the scholars there. After getting education, he revealed his secret to his teacher, he made it clear to the teacher that he was a Muslim. The teacher told him to translate whatever Sanskrit book he wanted but the teacher ordered him not to translate the Gayatri Mantra even by mistake. Faizi translated the important Sanskrit book 'Nal Damyanti' into Persian and narrated it to the king. In this way, Faizi also translated some parts of Mahabharata. It should be noted that Persian was the official language in those times. In this way, we see that Sanskrit literature developed a lot. Ramayana, Atharvaveda, Panchtantra, Mahabharata, Bhaskar's Ganit Shastra and Lilavati texts were translated into Persian. Faizi's younger brother Abul Fazal also translated Kaliye Daman into Persian.

Hindi: प्रारंभिक दो मुगल बादशाहों के कालखंड में संस्कृत की उपेक्षा की गई किन्तु तीसरे मुगल बादशाह अकबर ने इसे राजाश्रय दिया। यो तो दरबारे अकबरी में विभिन्न भाषाओं के अत्यंत महत्वपूर्ण 59 कविगण थे, किन्तु संपूर्ण की संख्या काफी अधिक थी। बादशाह अकबर ने संस्कृत के विद्वानों को पुरस्कृत भी किया। उस काल में कविगण प्रायः संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ज्ञाता थे। संस्कृत का एक शब्दकोश ''फारसी प्रकाश'' लिखा गया। अकबर ने अपने राज कवि फैजी को आदेश दिया की संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रंथों का फारसी में रूपांतरण कर उसके मूलभूत तत्वों को बादशाह को समझाए। फैजी ने अपना नाम बदलकर बनारस आया और वहां के विद्वान से वह संस्कृत की शिक्षा प्राप्त किया। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् उसने अपना भेद, अपने गुरु के समक्ष खोल दिया, वह मुसलमान था यह गुरु को स्पष्ट कर दिया। गुरु ने उससे कहा कि संस्कृत के जिस ग्रंथ का भी तुम्हें अनुवाद करना हो वह करना किन्तु गुरु का आदेश है कि, तुम गायत्री मंत्र का अनुवाद भूल से भी मत करना। फैजी ने संस्कृत की महत्वपूर्ण पुस्तक 'नल दमयंती' का अनुवाद फारसी में करके बादशाह को सुनाया। इस प्रकार फैजी ने महाभारत के भी कुछ अंश का अनुवाद किया। ध्यातव्य हो कि उस काल में फारसी राजभाषा थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत साहित्य का विकास काफी हुआ। रामायण, अथर्ववेद, पंचतंत्र, महाभारत, भास्कर का गणित शास्त्र और लीलावती ग्रंथों का अनुवाद फारसी में किया गया। फैजी के छोटे भाई अबुल फजल ने भी कालिये दमन का अनुवाद फारसी में किया।

Keywords: Manglik, Folk Art, Chowkpurana, Symbol, Tradition, मांगलिक, लोककला, चौकपूरना, प्रतीक, परम्परा

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.6315

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

प्रारंभिक दो मुगल बादशाहों के कालखंड में संस्कृत की उपेक्षा की गई किन्तु तीसरे मुगल बादशाह अकबर ने इसे राजाश्रय दिया। यो तो दरबारे अकबरी में विभिन्न भाषाओं के अत्यंत महत्वपूर्ण 59 कविगण थे, किन्तु संपूर्ण की संख्या काफी अधिक थी। बादशाह अकबर ने संस्कृत के विद्वानों को

पुरस्कृत भी किया। उस काल में कविगण प्रायः संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ज्ञाता थे। संस्कृत का एक शब्दकोश ''फारसी प्रकाश'' लिखा गया। अकबर ने अपने राज कवि फैजी को आदेश दिया की संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रंथों का फारसी में रूपांतरण कर उसके मूलभूत तत्वों को बादशाह को समझाए। फैजी ने अपना नाम बदलकर बनारस आया और वहां के विद्वान से वह संस्कृत की शिक्षा प्राप्त किया। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् उसने अपना भेद, अपने गुरु के समक्ष खोल दिया, वह मुसलमान था यह गुरु को स्पष्ट कर दिया। गुरु ने उससे कहा कि संस्कृत के जिस ग्रंथ का भी तुम्हें अनुवाद करना हो वह करना किन्तु गुरु का आदेश है कि, तुम गायत्री मंत्र का अनुवाद भूल से भी मत करना। फैजी ने संस्कृत की महत्वपूर्ण पुस्तक 'नल दमयंती' का अनुवाद फारसी में करके बादशाह को सुनाया। इस प्रकार फैजी ने महाभारत के भी कुछ अंश का अनुवाद किया। ध्यातव्य हो कि उस काल में फारसी राजभाषा थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत साहित्य का विकास काफी हुआ। रामायण, अथर्ववेद, पंचतंत्र, महाभारत, भास्कर का गणित शास्त्र और लीलावती ग्रंथों का अनुवाद फारसी में किया गया। फैजी के छोटे भाई अबुल फजल ने भी कालिये दमन का अनुवाद फारसी में किया।

बादशाह अकबर के काल के पश्चात् भी, जहाँगीर और नूरजहाँ के काल में अनुवाद का क्रम जारी रहा और चित्र मीमांसा खंड जोड़, अलंकार काल का महत्वपूर्ण ग्रंथ था, उसका अनुवाद भी फारसी में किया गया। संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान पंडित राज जगन्नाथ ने ''आसक्त विजय'' पुस्तक की रचना की। यह आसक्त विजय मूल रूप से आसिफ खां जो नूरजहाँ का भाई था, उसकी प्रशंसा में कवि जगन्नाथ में लिखी थी। जिसके लिए नूरजहाँ ने पंडित जगन्नाथ को कविराज की उपाधि दी थी और उन्हें सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त शाहजहाँ के शासनकाल में हरि नारायण मिश्र और बंशीधर मिश्र संस्कृत के कवि थे, जो राज दरबार में सुशोभित थे। मुनीश्वर दास द्वारा रचित सिद्धांत सार्वभौम और भगवती स्वामी की काव्य वृत्त बोध पुस्तक शाहजहाँ को समर्पित की गई थी। यहां ध्यातव्य हो कि शाहजहाँ का राज कवि, कविराज जगन्नाथ थे, जिनकी दो महत्वपूर्ण पुस्तक क्रमशः गंगा लहरी और प्रिया लहरी आज भी संस्कृत के विद्वानों के बीच प्रशंसनीय है। औरंगजेब के शासनकाल में संस्कृत के विद्वान रघुनाथ ने मुर्हूत माला नामक पुस्तक की रचना की और रसकल्प द्रुण की रचना चतुर्भूज ने की जो काफी महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस प्रकार हम देखते है कि मुगल काल में संस्कृत का विकास यथेष्ठ हुआ। अनेक मुसलमान शासकों ने संस्कृत एवं प्रांतीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिया।

आलोच्य काल में हिन्दी की जगह क्षेत्रीय भाषाओं में बहुतेरे पुस्तक की रचना की गई, जिसमें फारसी भाषा के शब्दों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया। क्षेत्रीय भाषा जैसे - कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, मराठी, बांग्ला, अवधि के बीच फारसी शब्दों का भी आदान-प्रदान प्रारंभ हो गया। अवधि एवं ब्रजभाषा में भी फारसी शब्दों का जमकर प्रयोग हुआ, उस काल की प्रसिद्ध पुस्तक पद्मावत जिसके कवि मलिक मोहम्मद जायसी हैं, उस पुस्तक में भी फारसी शब्दों का प्रयोग बहुतायत है। फारसी का असर पंजाबी भजनों में भी परिलक्षित होता है। मैथिली भाषा के कवि विद्यापति ने भी अपनी रचनाएं नुसरत शाह को समर्पित किया था। भगवत गीता का भी बांग्ला में अनुवाद हुआ। अबुल फजल का कहना है कि - भाषाविद् हिन्दी, यूनानी, अरबी और फारसी पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में लगे रहते थे।

भक्ति काल के कवियों में सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, कबीर दास ये सभी लगभग मुसलमानी शासन काल में ही थे। मुगल काल में हिन्दी साहित्य में क्षेत्रीय भाषा-ब्रज भाषा एंव अवधि में महत्वपूर्ण रचनाएं हुई । ऐसा देखा जाता हैं कि उसे काल में हिन्दी साहित्य के माध्यम से हिन्दू धर्म को काफी प्रोत्साहन मिला। हिन्दी साहित्य में प्रेम मार्गी एवे सूफी शाखा के कवि जायसी ने पद्मावत लिखा, जिसमें उसने अपने धर्म दर्शन को उल्लेखित किया। निर्गुण पंथ के सुंदर दास, मलका दास तथा दादू ने सरल भाषा में काव्य की रचना कर जनमानस को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त सूरदास ने सूरसागर की रचना की, उनकी पुस्तक सूरसागर ब्रजभाषा में अनुपम स्थान रखता है और श्री कृष्ण प्रेमियो के लिए वह अद्भूत ग्रंथ है। कृष्ण भक्ति का यह सर्वोत्तम ग्रंथ छंद में हैं। सूरदास का संबंध अकबर से भी था और आगरा में उसे अंधे भांट के नाम से जाना जाता था। सूरदास की भाषा प्रेम भक्ति में सराबोर थी। सूर के पश्चात् नंद दास कृष्ण भक्ति के दूसरे कवि हुए। कृष्ण दास रसखान और मीराबाई की कविताएं आज भी हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती है।

तुलसीदास अवधि भाषा के महानतम कवि थे, यू तो उन्होंने बहुत सारी पुस्तकों की रचना की है, जो सनातन धर्मियों को जीवन जीने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पथ प्रशस्त किया है। बादशाह अकबर ने उससे प्रभावित होकर बुलावा भेजा था किन्तु उन्होंने कहा कि, मेरा तो इस जहां से एक ही बादशाह है और वह है, श्री राम। हिन्दी के कवि गोपाल सिंह नेपाली में ठीक ही लिखा है -

तुलसी नहीं हुए होते तो, हिन्दी कहीं पड़ी होती।
हिन्दी के माथे पर, रामायण की बिंदी नहीं जड़ी होती।

वर्तमान काल में सनातन धर्मियों के लिए रामायण मूल ग्रंथ के रूप में स्थान पा चुका है और असंख्य मंदिरों में तुलसीदास की मूर्तियां बन चुकी है। वर्तमान काल में चार शताब्दी के बाद भी लोग दैनिक पूजा पाठ में उनकी रामायण पाठ किए बिना अन्न जल ग्रहण नहीं करते। प्रत्येक शनिवार एवं मंगलवार को कष्ट निवारण हेतु शायद ही कोई ऐसा हिन्दी भाषी गांव हो जहां रामायण के सुंदरकांड का पाठ न होता हो। मूलतः तुलसीदास राम भक्ति शाखा के श्रेष्ठतम कवि थे। मीराबाई की भक्ति पर कविताएं आज भी गेय है और सनातन धर्मियों के जिह्वा पर बड़े पैमाने पर विराजमान है।

निर्गुण पंथ का प्रतिनिधित्व कबीर दास ने किया, जो महान धर्म सुधारक भी कहे जाते हैं। कबीर ने दो प्रमुख शब्दों में सनातन एवं इस्लाम धर्मावलंबियों कि रूढ़िवादिता पर कट्टर प्रहार किया। निर्गुण शाखा के दूसरे कवि रामदास थे, रविदास का नाम भी साहित्यिक विकास में लेना समीचीन जान पड़ता है।

अतः उपर्युक्त उल्लेखित तथ्यों के आधार पर हम कह सकते है कि, मुगल काल में भी फारसी एवं उर्दू का वर्चस्व होते हुए संस्कृत एवं हिन्दी का यथेष्ट विकास हुआ क्योंकि आज भी सूर, तुलसी, रहीम कबीर, कविराज जगन्नाथ सदृश्य साहित्य की अपार कमी है।

संदर्भ सूची

आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत
विपिन बिहारी सिन्हा, मध्यकालीन भारत
हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत भाग 2
एल.पी. शर्मा, मुगलकालीन भारत